हिन्दी साहित्य : विविध संदर्भ

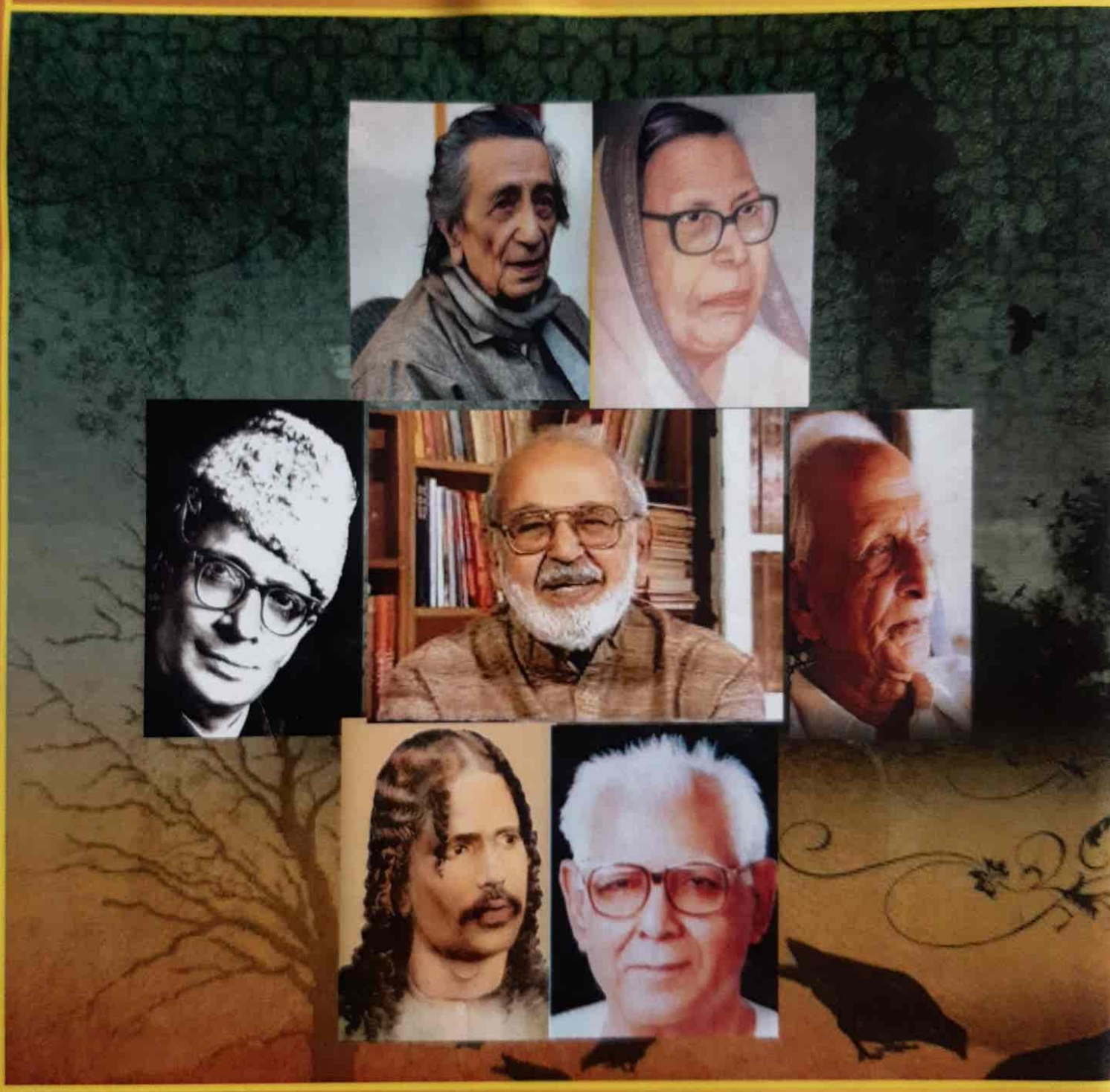

सम्पादक
डॉ० मंजू कुमारी

प्रथम संस्करण

वर्ष – 2017

मूल्य –155 रुपये मात्र

ISBN- 978-93-83583-03-4

सृजन समिति प्रकाशन
ककरमत्ता, डी0एल0डब्ल्यू0
वाराणसी–221004
E-mail : srijansamiti@rediffmail.com

मुद्रक :
शिवांश कम्प्यूटर्स
सामनेघाट, महेश नगर कालोनी।
वाराणसी–221005
सम्पर्क सूत्र–8004298122

Note: All right reserved, no part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any mean – electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior permission of the author.

अनुक्रमणिका

1. स्त्रीवादी चिन्तन और महादेवी वर्मा का गद्य ... 01–11
डॉ० संगीता यादव

2. कथाकार मार्कण्डेय ... 12–22
डॉ० सजीत कुमार सिंह

3. प्रयोगवाद और अज्ञेय की रचना दृष्टि ... 23–32
डॉ० अर्पणा पाण्डेय

4. उपेंद्र नाथ 'अश्क' की रचनाशीलता के विविध आयाम ... 33–48
डॉ० ज्योति दूबे

5. राम दरश मिश्र के लघु उपन्यासों का अवलोकन ... 49–60
डॉ० मन्जू कुमारी

6. तमस उपन्यास में राजनीति एवम् साम्प्रदायिक चेतना के स्वर ... 61–69
डॉ० सुमन विश्वकर्मा

7. स्त्री केन्द्रीत मिथकिय नाटक आज के संदर्भ में ... 70–85
डॉ० नमिता जैसल

8. प्रगतिशील साहित्य और केदारनाथ अग्रवाल का काव्य ... 86–99
डॉ० संगीता चौधरी

9. आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श : भारतेन्दुयुगीन निबन्ध ... 100–108
डॉ०संजय कपुर

10. दलित और आदिवासी साहित्य : एक तुलनात्मक अध्ययन ... 109–114
डॉ० प्रीति सिंह

11. भारतीय साहित्य में आध्यात्मवाद और उसके लाभ ... 115–124
डॉ० ऊषा मिश्रा

12. वाराणसी : साहित्यकारों व उनके स्थलों में पर्यटन का योगदान ... 125–132
प्रिया सिंह

(10)

दलित और आदिवासी साहित्य : एक तुलनात्मक अध्ययन

–डॉ0 प्रीति सिंह*

दलित और आदिवासी विमर्श हाशिये का विमर्श है। ये दोनों समाज हाशिये का समाज कहलाते हैं। इसलिये इन दोनो विमर्शों के एक होने का भ्रम होने लगता है। इनके साहित्य एक दूसरे में गड्डमगड्ड होने लगते हैं। तब यह जरूरी हो जाता है कि हम साफ कर लें कि दोनों में पर्याप्त अन्तर है। इसमें अलग–अलग समाजों का अन्तर है। आदिवासी सम्पूर्णतः हिन्दू समाज के वरक्ष खड़े हैं। उनकी भाषा संस्कृति बिल्कुल उनकी अपनी भाषा और संस्कृति है जबकि दलितों की कोई अपनी अलग भाषा नहीं है, वे वही भाषा बोलते है जो गाँव के बाकी हिन्दू बोलते है। उनकी संस्कृति पर भी हिन्दुओं की संस्कृति का काफी असर दिखायी देता है। मसलन नारी की स्थिति या जाति प्रथा को लेकर जबकि आदिवासियों के अन्दर जाति प्रथा का प्रभाव नहीं मिलता है।

ऐतिहासिक रूप से आदिवासी एक स्वतन्त्र समाज रहे हैं। जबकि दलितों की स्थिति हिन्दू समाज में गुलामों जैसी रही है। आदिवासी भौगोलिक दृष्टि से भी स्वतन्त्र रहे है। यानी वह बाकी मुख्य समाज से अलग दूर जंगलों पहाड़ों पर रहते आये हैं, जबकि दलितों का कोई अलग स्वतन्त्र प्रदेश नहीं रहा है। वे हर हिन्दू गाँव में उसके एक अंग के रूप में, उस गाँव से बंधे हुए रहे है। आदिवासी एक दलित की तुलना में ज्यादा सीमित और बंद दुनिया में रहता है, जबकि दलित आदिवासियों जैसी सीमित न बंद दुनिया में नहीं रहता है।

दलितों की मुख्य समस्या सामाजिक अपमान की रहीं है। उनकी लड़ाई सामाजिक न्याय की है। एक समाज के भीतर अपने समस्त श्रम का योगदान करके समस्त मूल अधिकारों से वंचित होने की रही है। आदिवासियों की समस्या पहचान की है। मुख्यधारा का सभ्य समाज उनकी पहचान ही मिटाने पर तुला हुआ है। उनकी स्वायत्त अर्थव्यवस्था को

*पी0डी0एफ0, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय ।